रात्रिक्लास 10-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

आज दीदी नहीं है। कहांगई यह तो बताया होगा कि अहमदाबाद में माकन देखने गई है। जितना बड़ा शो होता हैउतनी कशिश करता है। जहां बड़ा गांव शहर होता है, तो देखने लिए जाते हैंना, छोटा शो भी किय जाता है। बड़ा शो भी किया जाता है। गली2 में भी किया जाता है। क्योंकि बाप से वर्सा लेना है। वहां एक बच्चा एक बापसे वर्सा लेते हैं। यहां फिर एक बाप से अनेक बच्चे वर्सा लेते हैं। बच्चे जानते हैं किबच्चों को यह निश्चय है कि बेहद बाप आते हैं बेहद का वर्सा देने। बापऐसा वर्सा देते हैं जो कोई भी छीन न सके। यहां तो टूकड़2 पर झगड़ा चलता रहता है। वहां अशान्ति का नाम-निशान नहीं। और बच्चों को भी यह समझना चाहिए कि बाप स्थापना जरूर करेंगे। कल्प2 स्थापना जरूर होनी है। जब बाप को स्थापना ही करनी है तो रांग्ू समझवाज़ बच्चों साथ होगा। यहां कोई को गलीचा, टेबुल, कुर्सी खाना वगैरह दिया जाता है। जैसे बनारस का एक सेठ कहता है कि हम बाबा के पास जावें। तो अभी वह आवे तो खातरी जरूर करेंगे। अभी उस में ज्ञान भी नहीं हैं। भक्त है। परन्तु पवित्रता अच्छी लगती है। पवित्रता पर ही तो सभी माथा झुकाते हैं। बाप समझाते हैं नई दुनिया में पवित्रता है तोशान्ति सुख भी है। जो कि अभी नहीं हैं। अभी बच्चों को अपन कोदेखना है। और गुण ग्राहक होना है। समझाते भी हैं सहज, रास्ता भी सहज बताते हैं। इसका नाम ही है सहजराजयोग। बाप कहते हैंयाद की यात्रा पर रहो। यह याद के लिए बड़ी× श्रीमत मिलती है। बच्चे याद की यात्रा रहनेसे ही पाप कटेंगे। फिर ज्ञान देते हैं 84 चक्र का। अच्छा कोई आते हैंकहते हैंकुमारिया कुमारियां कितनी मीठा ज्ञान देती हैं। अभी भक्तों की भी बड़ी सम्भाल करनी पड़ती है। लॉ कहती है सतयुग में भक्ति नहीं। कलियुग में भक्ति है। ज्ञान नहीं। ज्ञान सिर्फ संगम पर ही होता है। बच्चे जो आये हैं समझते हैं भक्ति तो हम जन्म जन्मान्तर करते आये। यह एक ही बार हम ज्ञान लेते हैं। यह पढ़ाई एक ही बार मिलती है। जैसे आई0सी0एस0 बन गया फिर क्या पढ़े। तो यह भी बड़े ते बड़ा इम्तहान है और पढ़ाने भी है बड़ा। जितना पढ़ेंगे उतना ही अपन को फायदा पहुंचायेंगे। रेगुलर पढ़ना पड़े। कोई भी बात समझ में न आये तो दूसरे को न सुनाना चाहिए। जिससे संशय बुधि बन जावे। यह डबल बाप है। अपना भीनुकसान तो दूसरों को भी नुकसान। बाप तो फायदा पहुंचाते हैं। तो बच्चों को भी कहते हैंएक दो को फायदा दियो। परन्तु माया के वस नुकसान कर देते हैं। रावण तोबाप नहीं है। बाप से वर्सा मिलेगा। रावण से वर्सा नहीं मिलता। वर्सा मिलता है खुशी की चीज़ का। भक्ति में कोई खुशी की चीज़ नहीं मिलती है। बाप आते हैं सर्व का भला करने। सारी दुनिया का भी कल्याण होता है। इसमें संशय वा मुंझने कीदरकार नहीं। हर 5000वर्ष बाद यह चक्र फिरता रहता है। जो एक्टर हैं वही फिर होंगे। यह चित्र है जो तुम्हारा ग्रॉ बचाव करते हैं। यह चित्र तुम्हारी समआवजेक्ट बताते हैं। सुख-दुःख का खेल है। आधा सुख आधादुःख नहीं है। सुख तुमको पौना हिसा मिलता है। जो नीचे हैं विचार सागर मथन करते हैं। ब्रहमा विष्णु शंकर को पतित पावन नहीं कहेंगे। क्योंकि यह सभी शरीरधारी है। वह खुद आकर कहते हैं मैं इस में प्रवेश करता हूं। मैं आकर आत्माओं को पढ़ाता हूं। सतयुग में मैं नहीं आता हूं। फिर 5000वर्ष बाद आऊंगा। बाप एक बार आकर इस भारत को स्वर्ग बनाते हैं। कई कहते हैं क्या परमात्मा सिर्फ भारत में ही आता है। बस और कहां नहीं जावेंगे। हंसी खुडी भी कई करते हैं। जब भारत है तो और कोई धर्म नहींतुम्हारे पास गीत है बाबा आप ने जो दिया हैवह और कोई छीन न सके। वह है हद का बाप। यह है बेहद का बाप। मां बाप कैसे बच्चों को सम्भालते हैं। यह ड्रामा में है। इसमें हमकिसका दोष नहीं निकाल सकते हैं। बच्चों को बहुत सयाणा होना चाहिए। ऐसे नहीं अपना भी नुकसान तो औरों को भी नुकसान कर दो। यह समझानी कब कोई दे न सके। कईकहते हैं ऐसा ज्ञान तो कब हमको मिला नहीं है। हां 5000 वर्ष पहले मिला था। फिर अभी मिलता है। बाकी भक्ति तो जन्म-जन्मान्तर करते आये हो। शास्त्र पढ़ते आये हो। तो बाबा आकर हमको बेहद की नॉलेज सुनाते हैं। बाबा ने मंत्र पढ़ाया है आई एक आत्मा। अहंब्रहमास्मि

यह कोई मंत्र नहीं। यहां ओम कोभी अर्थ बाप समझाते हैं। हम आत्मा हमारा बाप परमपिता परमात्मा है। ऐसे नहीं कि हम आत्मा सो परमात्मा। लेकिन तुम जो चक्र लगाते हो। हम सो ब्राह्मण फिर हम सो देवता बनेंगे। फिर हम सो क्षत्री फिर वैश्य शुद्र फिर हम सो ब्राह्मण। सुखधाम और शान्तिधाम में जाते हैं। वह तो हम सो परमात्मा कहते हैं। हरेक बात में निश्चयकरना चाहिए। गंगा का तट हो, गंगा का जल हो, यह असत्य है। बाकी सत्य क्या है, शिव बाबाको याद हो, शिव बाबा का तट हो, तब प्राण तन से निकले। यह सभी समझना चाहिएकि स्वर्ग की स्थापना बापही करते हैं। कितना मीठा बाबा है। प्रवाह थी पार ब्रहम में रहने वाले परमात्मा को, जब वह मिल गया तो बाकी क्या। भक्ति मार्ग में सभी आत्माओं को परमात्मा की प्रवाह थी वह वेहद का से वर्सा मिलता है बाकी क्या। ऐसी2 बातों से अपने को बहलाते रहो। अन्दर याद भी करते रहो। इस ज्ञान योग से ही सारी सृष्टि बदलती है। तुम समझते हो हम सभी बदल जावेंगे। फिर तो देवता बन जावेंगे। सृष्टि भी ऐसी बन जावेगी। अभी अलफ को याद करो। जैसे बच्चापैदा होता है तो छोटा होता है उनको मालूम नहीं पड़ता, दूसरे तो समझते हैं फलाने को भी बच्चा पैदा हुआ। मिलकीयत का वारिस आया। वहां संशय नहीं होता। यहां माया संशय बुधि बना देती है। इसलिए ब्राह्मण माया को सम्भाल करनी है। आंख बिटो, लाल बिटो, चुहरे को सम्भाल करना। कहां तुम थे। कहां तुम ऐसे बने हो। यह बहुत ही इन लोक बनाते थे। साधु सन्त महात्मा सभी साधना करने वाले हैं इनका अर्थ कुछ भी नहीं जानते। यह मुफ्त में खा पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आये पसल को खा चले जाते हैं। यहसाधु सन्त भी मकर है। जो खा पीकर खला-स कर देते हैं। बाबानिन्दा नहीं करते हैं, समझाते हैं। यह भी ड्रामा में इनका पार्ट है। बाप समझाते हैं कि यह भक्ति मार्ग के अनेक गुरु हैं। कहते हैं चढ़ाई है जहां से भी जाओ रास्ता मिलेगा। मिल जायेगा। परन्तु यह कोई हिमालय पहाड़ थोड़े ही है। बाप कहते हैं आई एम युओर ओबेडीयन्ट सर्वेन्ट। इनको बुलाते हो कि आकर पतित से पावन बनाओ। इनको सोनार घोबी आदमी कहते हैं। यहकमाई वह नहीं। जो ब्रह्म साधु सन्त की कमाई है। यह तो बच्चों से 21 जन्मों लिए कमाई कराते हैं। यहां महल भी ही बनाते हैं। तुम शिव बाबा सेलेते हो, देने की बात नहीं करनी चाहिए। अच्छा रूहानी बच्चों को गुडनाईट पायन्टस :- तुम बच्चों ने यह नालेज कितनी बार ली होगी? बाप कितना बार आया होगा? इस तन में बाप कहते हैं अनेक बार सृष्टि को पलटाया है। याद की मुख्य है। दोनो इकट्ठे बैठे हैं तभी याद ठहरती। कायदे मुजीब जैसे तुम यादकरते हो वैसे बाबानही कर सकते। घड़ी2 खयालात आ जाती है। कहते भी हूं मेरे लिए सहज है। परन्तु फिर भी भूल जाता हूं। मैं न भूलूं तो अभी ही कर्मातीत अवस्था हो जाये। शरीर छूट जाये। कारण है नाकोई। कर्मभाग भी होताहै। रोज इन्जेक्शन मसल्स लगाताहूं। बाबा कहते हैंकर्मातीत अवस्था पाना कोई मासी का घर थोड़े ही है। जानते हैं हम दोनो ही साथ हैं तो कर्मातीत अवस्था अभी नहीं होसकती। याद की बात ही और है। भल मैं घोड़े पर बैठा हूं तो भी तुमको मेहनत करनी है। तुम ने ही ऐसे कर्म किये हैं ना। फर्स्ट नम्बर सतोप्रधान तुम थे फिर तमोप्रधान भी तुम ही बनते हो सब से जाती। तो मेहनत करनी पड़े। नम्बरवन तो नम्बर लास्ट बना है। फिर मेहनत से नम्बरवन बनेंगे ना। कर्मातीत अवस्था को पाने मेहनत करनी पड़े। कर्मातीत अवस्था बिगर यह पदे पा नहीं सकते हैं। शरीर छूटेगा तब जब बाप का रथ आकर लेगा। अच्छा ओम्।